ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-2*March- 2018
Innovation The Research Concept

जयपुर जिले में खनिजों पर आधारित उद्योग : वर्तमान और भविष्य की संभावनाएँ

बाबू लाल मीना
शोधार्थी,
भूगोल विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर, राजस्थान

सारांश

उद्योग शब्द अंग्रेजी के 'इण्डस्ट्री' शब्द का समार्थी है जिसका अर्थ है। कच्चे माल से वस्तुओं का निर्माण करना। जर्मन इण्डस्ट्री शब्द का अर्थ है। मषीन का उपयोग करके अथवा कार्य करने की आधुनिक पद्वति का उपयोग करके बड़े पैमाने पर संसाधित करना। लैटिन में इण्डस्ट्रिया का अर्थ है व्यवसाय अथवा श्रम का निरन्तर उपयोग। उद्योग वह आर्थिक कार्य है जिससे उपयोगी वस्तुओं अथवा सेवाओं का जन्म होता है। उद्योग उन उद्यमों का समूह होता है जो समान आर्थिक वस्तुएं अथवा जनोपयोगी सेवाएं उत्पन्न करता है। प्रत्येक उद्योग श्रम की दक्षता पर आधारित होता है। इस तरह उद्योग शब्द विविध प्रकार के कार्यो का बोधक है। ये कार्य खनिज उत्खनन और अयस्क के गलाने तथा धातुओं को षुद्ध करने से लेकर इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का समायोजन तथा सुपर मार्केट तक आते है। संक्षेप में उद्योग प्राथमिक कार्यो से पदार्थ लेकर उनको संसाधित करते है। उद्योग के स्थल का आकार कृषित की तुलना बहुत कम होता है परन्तु निवेषित पूंजी, श्रम की लागत और निर्मित वस्तु की कीमत बहुत अधिक होती है।

मुख्य शब्द : खनिज उत्खनन, अयस्क, उद्योग श्रम, निवेषित पूंजी, आर्थिक वस्तुएं।

प्रस्तावना

वर्तमान में आर्थिक क्रियाओं के अंतर्गत उद्योग किसी भी देष प्रदेष या इकाई क्षेत्र में विकास के आधार होते है। क्षेत्र विशेष में विनिर्माण क्रियाओं का विकास होने पर ही अर्थव्यवस्था विकसित होती है। समग्र, संतुलित एवं त्वरित औद्योगीकरण प्रत्येक व्यक्ति को उचित मूल्य पर वस्तु, वृहत रोजगार एवं प्रति व्यक्ति उच्चतर आय प्रदान करता है।

खनिजों की अर्थव्यवस्था में न केवल महत्वपूर्ण भूमिका होती है बल्कि एक राष्ट्र के औद्योगिक विकास की धुरी होते है। राज्य की खनन क्रियाएं राज्य अर्थव्यवस्था की जीवन–रेखा है। यही कारण है कि विष्व में अब समाज का सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन–दर्षन प्रस्तर और प्रस्तर आधारित उत्पादनों में पूर्णतया समाहित हो गया है।

जयपुर जिले को राज्य का एक पिछड़ा जिला नहीं माना जा सकता है। प्रतिकूल भौगोलिक परिस्थितियों के बावजूद राज्य में स्थानीय संसाधनों पर आधारित इकाइयों की स्थापना हुई है। जिले की अर्थव्यवस्था की महत्वपूर्ण विशेषता इसके अधिकांष क्षेत्र वर्षा पर निर्भर है और यह अनिष्चित और असामयिक है। इन दषाओं में स्थानीय संसाधनों पर आधारित लघु उद्योग जीवन निर्वहन के महत्वपूर्ण स्त्रोत है तथा राज्य अर्थव्यवस्था की आय और उत्पादन में वृहत भाग का अंशदान करते है। इसके अतिरिक्त लघु पैमाने के उद्योग औद्योगिक सेक्टर के विकास और मजबूती में सार्थक योगदान करते हैं। ये उद्यमियों के लिए प्रबन्धन गुणों के अवसरों के साथ जिले के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस प्रकार के उद्योग सापेक्षित रूप में अधिक रोजगार के अवसर भी निम्न पूंजी लागत पर प्रदान करते हैं और अतिरिक्त मानव षक्ति को कृषिगत क्षेत्र में रोजगार देते है ऐसे में अध्ययन क्षेत्र के स्थानीय खनिज–आधारित उद्योग श्रम प्रदान होने से महत्वपूर्ण है जिनका विकास अध्ययन क्षेत्र की मरू भूमि पर हुआ है।

वर्तमान षताब्दी के आरम्भ से ही औद्योगिक भूगोल आर्थिक भूगोल का प्रमुख अंग रहा है। भूगोल की व्यापक परिभाषा के आधार पर आर्थिक भूगोल को आर्थिक क्रियाओं एवं प्रक्रियाओं का स्थानिक वितरण एवं व्याख्या करने वाली षाखा माना गया है। आर्थिक क्रियाओं में औद्योगिक क्रियाएँ प्रमुख है। इस आधार

पर औद्योगिक भूगोल को 'औद्योगिक क्रियाओं के स्थानिक विन्यास का अध्ययन कहा जा सकता है। अलेक्जेण्डरसन ने औद्योगिक भूगोल को परिभाषित किया है कि 'औद्योगिक भूगोल में उद्योगों' के वर्तमान भूमण्डलीय, महाद्वीपीय, राष्ट्रीय, प्रादेशक अथवा नगरीय वितरण के प्रतिरूप की विवेचना की जाती है।

अध्ययन क्षेत्र का परिचय

जयपुर शहर जो कि गुलाबी नगर के नाम से भी जाना जाता है। यह शहर बहुत ही सुदृढ ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का धनी है। यह राजस्थान राज्य की राजधानी भी है। विष्व के पर्यटन मानचित्र में अपना अलग महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

वर्तमान अध्ययन मं सम्पूर्ण जिला (ग्रामीण एवं नगरीय) को सम्मिलित किया गया है। जयपुर राजस्थान के पूर्वी भाग में स्थित है। जिले का कुल क्षेत्रफल 11588 वर्ग कि.मी. है तथा जिले की कुल जनसंख्या 52,51,071 है। इसका अक्षांषीय एवं देषान्तरीय विस्तार 26^{o} से $23^{'}$ से 27^{o} $51^{'}$ उत्तरी अक्षांक्ष तथा 74^{o} $50^{'}$ पूर्वी देषान्तर है। जिले की साक्षरता 70.61 प्रतिशत, लिंगानुपात 1000:897, जनसंख्या घनत्व 471 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. है।

जयपुर जिले में 13 तहसील है, जो कि जयपुर, बस्सी, चाकसू, सांगानेर, आमेर, जमवारामगढ़, चौमू, फुलेरा, दूदू, फागी, कोटपूतली, विराटनगर एवं शाहपुरा भाग विभाजित है। जिले में वन 944.52 वर्ग कि.मी. में फैले हुए है। यहां की मिट्टी कच्छारी प्रकार की है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. अध्ययन जिले में खनिज आधारित उद्योगों का मूल्यांकन करना।
2. आय और रोजगार सृजन मे उद्योग के महत्व की पहचान करना।
3. उद्योग की विभिन्न प्रक्रियाओं में लागत संरचना का विश्लेषण करना।
4. उद्योग के सामयिक और स्थानीय विकास का विश्लेषण करना।
5. उद्योगों के गुणात्मक तथा मात्रात्मक वृद्धि के लिए सुझाव देना।

परिकल्पना

1. जयपुर जिले में स्थानीय खनिजों पर आधारित औद्योगिक क्रियाओं के लिए अवस्थित कारक जैसे कच्चे पदार्थ, जलापूर्ति, मांग, यातायात सम्बन्धता तथा संरचनात्मक सुविधाएं आदि अनुकूल कारक उपलब्ध है।
2. अध्ययन क्षेत्र में परिवहन एवं संचार, सिंचाई, शक्ति, औद्योगिक प्रषिक्षण आदि कारकों के ऐतिहासिक विकास के साथ–साथ औद्योगिकरण में निरन्तर वृद्धि हुई है।
3. जिले के पूर्ण औद्योगिक विकास में विभिन्न औद्योगिक कारके जैसे जलाभाव, उष्णजलवायु आदि प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से बाधक है।

शोध विधि व समंको का स्त्रोत

प्रस्तुत शोध अध्ययन के दोनों ही प्रकार के समंको प्राथमिक एवं द्वितीयक का प्रयोग किया गया है। अध्ययन विषय की परिधि में दोनों ही प्रकार से प्राप्त सूचनाओं एवं समंको का विष्लेषण करने के उपरान्त सर्वोतम सम्भावित शोध परिणाम, सांराक्ष एवं सुझाव तैयार करने का प्रयास किया गया है।

प्राथमिक समंको के संग्रहण हेतु एक प्रष्नावली तैयार की गयी जिसका वृहतक उपयोग खनिज आधारित अद्योगों के विभिन्न पहलुओं के प्रतिदर्ष अध्ययन में किया गया है।

साहित्यावलोकन

इस क्षेत्र के प्रमुख भूगोलवेता–डी.एम.स्थिम, अलेक्जेण्डर, रॉबस्ट्रान एलन प्रेड डिकेई, नैनर, मर्फी और थाम्पसन है। इसी प्रकार प्रमुख अर्थषात्रियों में लून्हरहट, ए. वेबर, पेलैण्डर, इजार्ड, ए.लाष, ए.ई. हूवर, ए.ई. स्मिथ, हाटलिंग और एम.एल.ग्रीनहंट, आते है। इसमें से महत्वपूर्ण सिद्धातों का संक्षिप्त विष्लेषण इस प्रकार है।

अल्फ्रेड वेबर (1929) ने अपने न्यूनतम लागत सिद्वांत में किसी कारखाने की अवस्थिति परिवहन लागत की भूमिका को सर्वाधिक महत्व दिया गया हैं। इसके पश्चात् श्रम लागत तथा समूहीकरण के प्रभाव को स्पष्ट किया है। उनके अनुसार प्लाण्ट उसी स्थिति पर लगेगा, जहॉ न्यूनतम लागत आती है। इसी संदर्भ में उन्होंने आइसोटिम आइसोडापेन पदार्थ निर्देषांक श्रम निर्देषांक विनिर्माण निर्देषांक आदि का प्रयोग किया।

हूबर (1937,48) ने मांग पूर्ति और सरकारी नीतियों के प्रभाव का क्षैत्रीय विष्लेषण प्रस्तुत किया। उनके अनुसार परिवहन लागत की संरचना उद्योग को सर्वाधिक प्रभावित करती हैं।

ग्रीनहंट (1956–1963) ने न्यूनतम लागत एवं अवस्थिति अन्तरनिर्भरता सिद्वांत दोनों का अवस्थिति विष्लेषण किया। लागत और मांग तत्वों के साथ घटती लागत, राजस्व वृद्वि और व्यक्तिगत तत्वों को भी उन्होंने अपने सिद्वांत में प्रमुखता दी हैं।

ऑगस्ट लॉष (1954) ने मार्केट एरिया स्कूल प्रस्तुत किया। उनके अनुसार प्लाण्ट की अनुकूल अवस्थिति वहॉ होगी, जहॉ अधिकतम एकाधिकारी बाजार की संभावना होगी और प्लांट अधिकतम लाभ अर्जित कर सकें।

ईजार्ड (1956–1960) ने प्रतिस्थापन सिद्वांत प्रस्तुत किया उन्होंने अवस्थिति की समस्या को स्थानापन्न लागत और उत्पादन राजस्वों के मध्य की स्थानापन्न समस्या माना। उन्होंने लागत और उत्पादन के बीच तुलना की और अधिकतम शुद्व लाभ को बताया।

संक्षेप में औद्योगिक अवस्थिति सिद्वांतों को हम तीन भागों में बांट सकते है। (1) न्यूनतम लागत स्कूल (2) मार्केट एरिया स्कूल और (3) अन्तरनिर्भरता अवस्थितिक स्कूल ग्रीनहट और स्मिथ ने समन्वित सिद्वांतों का प्रतिपादन किया।

पचास से अधिक भारतीय भूगोलवेताओं ने विभिन्न उद्योगों के अवस्थिति विष्लेषण में अपना अमूल्य योगदान दिया है। उनमें लोकनाथन, प्रकाष राव, कृष्णन, इन्द्रपाल, तिवारी, दुर्रानी, पाटनी, सिंह, सी.बी. तिवारी, चौधरी, प्रसाद, गुप्ता, राम, सिन्हा, विष्वकर्मा, ए.सिंह, एस. एन., सिंह, शुक्ला, प्रीति माथुर, कापस्था और सिंह, गर्ग, शर्मा, अग्रवाल, हेमलता जोषी, ए.सक्सेना, सत्यदेव, एल.सी.

मीना, पी.सिंह, बी.एल.मीणा, बीना सनाढ्य, जे.सी. कलुवावत, एस. टाकसाली और आर.एन.बैरवा, इत्यादि प्रमुख हैं।

जयपुर जिले में उद्योग की वर्तमान स्थिति

जयपुर जिला औद्योगिक दृष्टि से सम्पन्न बनता जा रहा है। जिले में राज्य व केन्द्र सरकार औद्योगिकरण की ओर विशेष ध्यान दे रही है। जयपुर में कृषि, पषुपालन एवं खनिज उद्योग ही अब जीवन का आधार बनते जा रहे है। जिले में कई लघु, मध्यम और बड़े उद्योग तो प्राचीन काल से ही चले आ रहे हैं जयपुर जिला प्राकृतिक संसाधनों से परिपूर्ण है और अनेक प्रकार के कृषि जन्म व नवीन खनिज पदार्थ मिले है और भविष्य में मिलने की संभावनाएँ है। जयपुर पषु सम्पदा में भी घनी है, तथा जिले में कृषि उपजों में निरन्तर वृद्धि हो रही है।

जयपुर जिले में कई वित्तीय संस्थाएँ, राजस्थान वित्त निगम (रीको) राजस्थान खनिज विकास निगम, भारतीय औद्योगिक वित्त निगम, औद्योगिक बैंक आदि संस्थाएँ विकास की और सतत् प्रयत्नशील है। क्योंकि जिले के बहुमुखी विकास की संभावना लघु व कुटीर उद्योग में अपेक्षाकृत अधिक है।

राजस्थान के जयपुर जिले में खनिज आधारित उद्योग में नवीन औद्योगिक विकास की संभावनाऐं निम्नानुसार है। खनिजः खनिज पिसाई, जिप्सम पाउडर पषुधनः ऊन उद्योग, जूट उद्योग, हड्डिया पीसना, चमड़ा उद्योग, बकरी के बालों पर आधारित उद्योग, मुर्गीपालन, डेयरी आदि उद्योग निर्मित है। वन बीड़ी उद्योग, इंजीनियरिंगः कृषि औजार एवं रिपेयरिंग वर्कशाप आदि का निर्माण करना। अन्य उद्योगः रंगाई व छपाई उद्योग, मगर बत्ती, कारपेट वीविंग, सीमेंन्ट के पाईप व जाली, कांच की कषीदाकारी, मीनाकारी, साबुन व फर्नीचर आदि उद्योग का निर्माण भी किया जाने लगा है।

अतः उपर्युक्त अध्ययन से स्पष्ट है कि जयपुर जिले में खनिजों पर आधारित उद्योगों का भविष्य बहुत ही उज्जवल है, बषर्ते राज्य व केन्द्र सरकार मिलकर एक साझा प्रयास करें, जिससे खनिजों और उद्योगों की तरक्की में बाधा ना आयें।

खनन उद्योग

खनन जब तक उद्योग के रूप में नहीं था, तथा धातुएँ सीमित व नियंत्रित मात्रा में थी, तब तक खनन से वायु प्रदूषण सीमित होता था, पर जब से खनन ने उद्योग किा आकार ले लियात, सम्पूर्ण वायुमण्डल इसकी चपेट में आ गया है। सामान्यतः खाने दो प्रकार की होती हैः–(1) बन्द खाने तथा (2) खुली खानें। खुली खानों से बहुत ही अधिक मात्रा में खनन पाउडर उत्सर्जित होकर वातावरण में सतत् मिलता रहता है। खनन उद्योग के श्रमिकों पर इस पाउडर की छापा हमेषा मडराती रहती है, तथा उनके सांसों के साथ यह फेफड़ों में प्रवेष करती है। जिससे सिलकोसिस बीमारी पैदा होती है। जो उनकी अकाल मृत्यु का कारण बनती है। सोप स्टोन व संगमरमर की चिराई से निरन्तर धूल के कणों के समान पाउडर उड़ता रहता है, जो उनके सांस के मिलता रहता है।

जहॉ ये खाने है वहॉ पर पड़े–पौधों का जीवन भी कठिनाई में पड़ जाता है, क्योंकि प्रकाष संष्लेषण जो उनके जीवन की आधारभूत प्रक्रिया है, हमेषा पत्तों पर छाई रहती है। जिस कारण भोजन प्रक्रिया सम्पन्न नही हो पाती है। वहॉ की हवा में सतत् सांस लेने वाले मनुष्यों को भी कुछ समय पश्चात् क्रिया में स्वाभाविक दिक्कतें आने लगती है।

मानव की बढ़ती जिज्ञासाओं एवं विविध उत्पादनों से मानव की आवश्कताएँ निरन्तर बदलते समयानुसार बढ़ रही है। प्रारम्भिक अवस्था में मानव केवल मूलभूत रोटी, कपड़ा और मकान (आवास) की पूर्ति में ही लगा रहा, परन्तु औद्योगिक विकास ने धीरे–धीरे रफ्तार पकड़ी तथा मानवीय जीवन शैली में बढ़लाव आया। औद्योगिक विकास के साथ ही मानवीय विलासिता सम्बन्धी आवष्यकताओं की अनुभूति हई तथा वर्तमान तकनीकी युग में आवष्यकताओं का स्वरूप बड़ा ही जटिल एवं विविध हो गया। जयपुर के औद्योगिक विकास में सबसे महत्व पूर्ण योगदान खनिज आधारित उद्योगों का रहा है, क्योकि राज्य का ही नहीं अपितु जिले की अर्थव्यवस्था में इनका महत्वपूर्ण योगदान है।

जिले में खनिजों पर आधारित उद्योगों का निरन्तर विकास से रहा हैं, तथा इनके उज्जवल भविष्य की संभावना सुस्पष्ट दृष्टिगोचर होती आ रही है। तथा उद्योगों को पर्याप्त मात्रा में कच्चा माल उपलब्ध हो रहा है। लेकिन वर्तमान में समय में बढ़ रही मानवीय श्रम एवं अन्य उद्योगों से प्रतिस्पर्द्धा इसका प्रमुख कारण है। उद्योगों की पर्याप्त मांग को देखते हुए जिले में अधिक से अधिक खनिज आधारित उद्योग स्थापित किये जाने की जरूरत है। जिनके स्थापित होने की जिले में सभी भौगोलिक सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

उद्योग किसी भी प्रकार का ही उसकी स्थिति का निर्धारण विभिन्न कारकों, उद्योग विशेष के स्वभाव, उसकी तकनीकी की, राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक वातावरण के आधार पर कारक विशेष का उद्योग पर प्रभाव ज्ञात किया जाता है। औद्योगिक अवस्थिति के प्रमुख भौगोलिक कारकों का विवेचन करने से पूर्व उन प्रमुख औद्योगिक भूगोलवेताओं के दृष्टिकोणों को जानना उचित होगा जिन्होंने औद्योगिक गतिविधियों पर कार्य किया हैं।

अल्फ्रेड वेबर 1929, ने बताया कि उद्योग की स्थापना उस स्थान पर की जानी चाहिए जहॉ पर न्यूनतम परिवहन लागत आती हो। जार्ज टी.रेनर के अनुसार किसी भी उद्योग की स्थापना उस स्थान पर की जाती है। जहां कारक कम खर्च पर एकत्रित किये जा सकते हो। फ्रेंक ए. फेटर (1924) ओर ऑगस्ट लॉष (1939) ने बताया कि उद्योग की स्थापना ऐसे स्थल पर की जाती है, जहॉ से कारखाने का बाजार क्षेत्र पर आधिकाधिक एकाधिकार हो सकें। जिससे कि अधिकतम लाभ कमाया जा सकें। ई.एम. राष्ट्रीय ने बताया कि अधिकतम लाभ कमाया जा सकें। ई. एम. राष्ट्रीय ने बताया कि भिन्न–भिन्न मदों पर होने वाले भिन्न–भिन्न खर्च के ढॉचे का परीक्षण कर कारखाने की स्थापना अधिकतम लाभ वाले स्थान पर की जा सकें।

जब किसी एक कारक विशेष की लागत एक स्थान से दूसरे स्थान पर भी अधिक आवष्यक हो जाती है, जबकि उस कारक विशेष की लागत कुल लागत का बड़ा

भाग हो। हूवर (1948) ने बताया कि उद्योग की स्थापना यातायात के न्यूनतम लागत वाले स्थान पर की जाती है।

उद्योगों की अवस्थिति के कारक

जयपुर में खनिज आधारित उद्योगों की अवस्थिति में जिन भौगोलिक कारकों का योगदान रहा है। उनमें स्थानिक चयन, कच्चा माल, श्रम, यातायात, बाजार, शक्ति, जल, पूंजी, सरकारी नीति, उधमकर्त्ता व जलवायु प्रमुख है। उद्योग किसी भी प्रकार का हो इन भौगोलिक कारकों के बिना उद्योग स्थापित नहीं किया जा सकता। उद्योगों के कारकों के महत्व के बारे में रोबिन्सन का यह वाक्य महत्वपूर्ण है–''यद्यपि कतिपय उद्योगों का उद्‌भव यकायक हो गया फिर भी किसी स्थान विशेष पर उसकी उपस्थिति के पीछे निष्चित कारण रहे है। यह स्पष्ट है कि पुराने एवं दीर्घकाल से स्थापित उद्योगों के लिए यह अधिक सत्य हैं।''

लोगों की समस्याएँ, समाधान एवं निष्कर्ष

जिले में केन्द्र व राज्य सराकर ने उद्योगों की स्थापना एवं विकास के लिए अनेक प्रयास किये। लेकिन फिर भी इन उद्योगों को निम्नलिखित समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

1. कच्चे माल की समस्या वित्तीय कठिनाई, उत्पादन विधि और संगठन तथा बड़े उद्योगों से प्रतिस्पर्द्धा।
2. ऊँची उत्पादन लागत, ऊँचा मूल्य और भारी कर भार, सस्ती चालक षक्ति और प्रबन्धकीय दक्षता का अभाव।
3. परिवहन सुविधाओं का अभाव, विज्ञापनों की भारी कमी इत्यादि।
4. सरकारी तंत्र की लचर व दोषपूर्ण प्रणालियॉं, जिससे अपनों को लाभ पहुँचे।

राजस्थान राज्य ओद्यौगिक विकास और विनियोग निगम (रीको) द्वारा अध्ययन जिले में ओद्योगिक विकास के लिये विभिन्न स्थानों पर संरचनात्मक विकास किया जा रहा है। जयपुर जिले में ओद्योगिक अभिवृद्वि केन्द्र आदि औद्योगिक क्षेत्र विकसित किये गये है। वर्तमान में विष्व अर्थव्यवस्था के भूमण्डलीकरण और उदारीकरण से यह आवष्यक है कि खनन उद्यमी और उद्योग इस प्रकार का प्रथम विकास करें जिससे वे अपने औद्योगिक उत्पादों के मूल्य और गुणवत्ता को प्रतिस्पर्धा में रख सकें।

मनुष्य द्वारा किए जाने वाले आर्थिक कार्य आखेट तथा मछली पकड़ना, कृषि एवं पषुपालन, उत्खनन, उद्योग, व्यापार तथा परिवहन है। कृषि के बाद उद्योग ही महत्वपूर्ण आर्थिक कार्य है। विकासषील दुनिया में क्रियाषील जनसंख्या का 28.3 प्रतिशत और विकसित देषों में 67.5 प्रतिशत सीधे निर्माण उद्योग में लगे हैं उद्योगों का विकास देष के आर्थिक विकास का मापदण्ड भी माना जाता है। औद्योगिक विकास से जीवनस्तर भी ऊँचा उठता है। यही कारण है कि औद्योगिक केन्द्र नगर पुंजों को विकसित होने में सहायता देते है। साथ ही पुंजों में औद्योगिक विकास की सुविधा के कारण अनेक उद्योग आकर्षित होते है।

जिले में नवीनतम नीतियों के प्रयत्नों से निम्न सुझाव दिए जा रहे हैः– उपभोक्ता सेवा निगम, पर्याप्त कार्यालय जैसी विषिष्ट संस्थाओं की स्थापना, वित्तीय सुविधाओं का विस्तार, उत्पादन तकनीकी में सुधार, अनुसंधान व प्रदर्षिनों का विस्तार, प्रषिक्षण व बिक्री सुविधाऍं, बैंकों आदि से जिले की आर्थिक आवष्यकताओं की पूर्ति की जा सकें। जिससे जिले में उद्योगों का भविष्य बहुत उज्जवल हो सकें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *आर.सी. शर्मा (1972) : सेटलमेन्ट जियोग्राफी ऑफ द इण्डियन डेजर्ट, नई दिल्ली*
2. *एच.एस. नम (1980) : एवड जोन रिसर्च एण्ड डेवलपमेन्ट काजरी, जोधपुर*
3. *मुस्लिम शेख (1992) : हयूमन इकॉलाजी ऑफ द इण्डिया डेजर्ट ए केस स्टडी ऑफ डिस्टिक्ट इन राजस्थान*
4. *ए के तिवाड़ी : डेजरफिम्सेनः मानीटरिंग एण्ड कन्टोल, जोधपुर*
5. *टी एस चौहान (1994) : नेचुरल एण्ड हयूमन रिसोर्सेज ऑफ राजस्थान, साइन्टीफिक पब्लिसर, जोधपुर*
6. *जे ए इलिओंट (1995) : इनटरडम्सन टू संसटेनबल डेवलपमेन्ट, आर्डर यू यूबीएस ऑन 17–1–95 पेज*
7. *बर्नाड गलेसर (1995) : हाउसिंग, संसटेनबल डेवलपमेन्ट एण्ड द रूरल पूअरः ए स्टडी ऑफ तमिलनाडू, नई दिल्ली*
8. *के, गोपाल अय्यर (1996) : संसटेनबल डेवलपमेन्टः इकालाजीकल एण्ड सोसीयोक्लचर डाइमेन्षन विकास, नई दिल्ली*
9. *अनिल के गुप्ता (1991):डार्ट, डिपरिवेसन एण्ड संसटेनबल डेवलपमेन्ट इण्डियन इस्टिट्यूट ऑफ मेनेजमेन्ट, अहमदाबाद*
10. *के जी अय्यर (1996) : संसटेनबल : डेवलपमेन्ट इकालाजिकल एण्ड सॉसियो कल्चर डाइमेषन विकास पब्लिक हाउस, पी वी टी लि देहली*
11. *एन एस जोधा (1995) : संसटेनबल डेवलपमेन्ट इन फरोजिल एनवाइरमेंट : इन ऑपरेषन फ्रेमवर्क फॉर एरिड सेमी, एरिड एण्ड माउटेंन एरिया, सेन्टर फॉर एनवायरमेन्ट एजुकेषन, अहमदाबाद, सीईई*
12. *जेम्स जोनिया (1992) : संसटेनबल डेवलपमेन्ट एण्ड एम्पावर फारेस्टी इन मलेषिया, इटरनेषनल लेबर ऑफिस, जिनेबा, वर्ल्ड एम्पलायमेंट प्रोग्राम*
13. *आर एल केरला (1993) : नेचुरल रिसोर्सेज मेनेजमेंट : ए न्यू प्रीपेस्कटिव नेषनल नेचुरल रिसोर्सेज मेनेजमेंट सिस्टम, इसरो, बेंगलौर*
14. *एस एन लीली (1989) : संसटेनबल डेवलपमेन्ट ए क्रिटीकल रिव्यु, 'वर्ल्ड डेवलपमेन्ट'*
15. *मेलकोलम न्यूसन (1993) : लेण्ड, वॉटर एण्ड डेवलपमेन्टः रिवरबेसिन सिस्टम एण्ड दियर संसटेनबल मेनेजमेंट, न्यूयार्क*
16. *जे पी जे (1989) : इकॉनामी ऐनेलेसस ऑफ संसटेनबल ग्राथ एण्ड संसटेनबल डेवलपमेन्ट डब्लू, पी न. 15, एनवायरमेन्ट डिपार्टमेन्ट, द वर्ल्ड बैंक वाषिंगटन डी सी*
17. *दी एन राव (1996) : हयूमन रिसोर्सेज डवलपमेन्ट : एक्सप्रियेन्स इंटरनेषनल स्टेटिजेस स्यूज, न्यू देहली*

18. *डेविड रिड (1995) : संसटेनबल डेवलपमेन्ट इन इंटसडॅयूटरी गाइड अर्थस्केन, लंदन*
19. *डब्लू. इ (1988) : ए रोल फॉर इनवापरमेन्ट एसेसमेंट इन एचिविंग संसटेनबल डेवलपमेन्ट इनवायरमेन्ट इम्पेक्ट एसेंसमेंट रिव्यू 8 (4) पी पी 273–291*
20. *वर्ल्ड बैंक (1996) : इनवायरमेंटली संसटेनबल डेवलपमेन्ट पार्टिसीपीएसन सोर्स बुक*
21. *सेसंष ऑफ इण्डिया (2002) : स्टेटीकल एब्सटेक्ट, जी ओ आर*